बोनोबो के औज़ार पाषाण-युग के औज़ारों के समान

बोनोबो चिंपैंज़ी की तरह ही निपुण होते हैं। लगता तो यह है कि उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले औज़ार प्राचीन मनुष्यों के औज़ारों जैसे ही हैं। लिहाज़ा बोनोबो के अवलोकन से मानव वैज्ञानिक यह समझने की कोशिश कर सकते हैं कि हमारे पूर्वजों ने यह हुनर कैसे हासिल किया था।

बोनोबो की दूसरी खूबियों का पता पहले भी था लेकिन औज़ारों वाली खूबी का पता हाल ही में चला है। इस्राइल स्थित हाएफा यूनिवर्सिटी के इटाई रॉफमैन और उनके साथियों ने बंदी अवस्था में रखे गए कान्जी नाम के बोनोबो को देखा जो एक लट्ठे को फोड़कर उसमें से भोजन प्राप्त करने के लिए पत्थर के औज़ार का इस्तेमाल करता था। लेकिन हो सकता है कि कान्जी एक अपवाद हो, जिसे मनुष्य ने प्रशिक्षित किया था और इशारों की भाषा भी सिखाई थी।

इसीलिए रॉफमैन की टीम आयोवा स्थित बोनोबो सेन्क्वुरी और जर्मनी के चिड़ियाघर में अन्य बोनोबो को देखने के लिए गई। इस टीम ने इन्हें ऐसी समस्याएं दीं जिनमें औज़ार का इस्तेमाल करना ज़रूरी था। जैसे उन्हें चट्टानों के नीचे दबा भोजन दिखाया गया। और वहीं पास में एक ट्रे में सींग और छड़ी जैसे संभावित औज़ार रख दिए गए।

चिड़ियाघर के आठ में से दो और सेन्क्वुरी में सात में से चार जानवरों ने इसके लिए औज़ारों का इस्तेमाल किया, कुछ ने तो लगभग तुरंत किया। बोनोबो ने खुदाई करने के लिए लकड़ियों, पत्थरों और सींगों का इस्तेमाल किया और बड़ी चट्टान को जगह से हटाने के लिए एक लंबी लकड़ी का इस्तेमाल लीवर की तरह किया। कुछ ने औज़ारों का

इस्तेमाल अलग-अलग क्रम में किया।

इसी तरह के दूसरे काम में सेन्क्वुरी के तीन जंतुओं ने अस्थि मज्जा में छुपे हुए भोजन को प्राप्त करने के लिए पत्थर को हथौड़ी की तरह इस्तेमाल कर लंबी हड्डियों को तोड़ा। एक बोनोबो ने तो एक लकड़ी को अपने दांतों से नुकीला कर भाला भी बनाया।

यह अध्ययन दिखाता है कि बोनोबो कई प्रकार के औज़ारों के इस्तेमाल में दक्ष हैं। उनको कोई कच्चा माल दिया जाए तो वे उसको इस्तेमाल में आने लायक बना लेते हैं। इस अध्ययन से लगता है कि औज़ारों का उपयोग काफी प्राचीन है और हमारे पूर्वजों ने भी औज़ारों का उपयोग किया है। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि अध्ययन मुख्य रूप से बंदी अवस्था के प्राणियों के साथ हुआ है। कुदरती अवस्था में स्थिति अलग हो सकती है मगर स्पष्ट है कि बोनोबो में भी यह क्षमता तो है। ***(स्रोत फीचर्स)***